हरियाणा में दर्शन एवम् लोकधर्म का विकास (Development of Philosophy & Folk Religion in Haryana)

प्रस्तुतकर्ता
डॉ. देशराज सिरसवाल

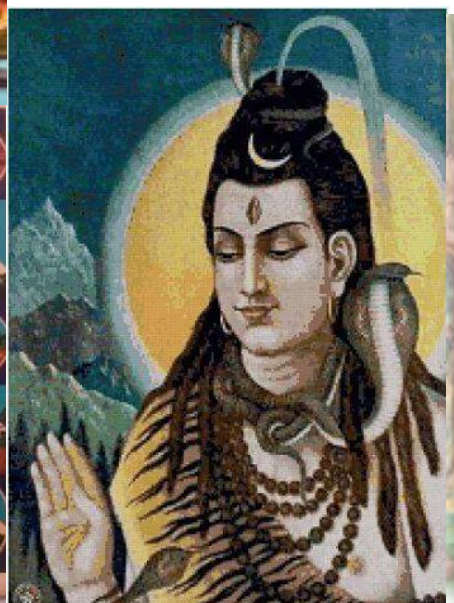

परिचय

- भारतवर्ष को दर्शन और धर्म की दृष्टि से विश्वपटल पर बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है. भारतीय समाज में धार्मिक विविधता के साथ-साथ हमें लोकधर्म की क्षेत्रीय स्तर पर हमें बहुत सी धाराएँ देखने को मिलती है. हरियाणा प्रदेश की भूमि को वैद, उपनिषद, महाभारत, पुराण, गीता आदि की रचना-स्थली भी माना गया है. इसे महाराजा हर्ष, सूरदास और बाणभट्ट जैसे महान व्यक्तित्वों की भूमि के साथ-साथ लोकभाषा का साहित्य का सृजनस्थल भी रहा है. लेकिन वर्तमान में हम वैश्वीकरण, सांस्कृतिकरण, और ब्राह्मणीकरण के चलते हम उन वैचारिक, सामाजिक और राजनैतिक प्रभाव डालने वाली संस्थाओं के महत्व को भूलाकर देश के सांस्कृतिक और दार्शनिक मूल्यों से दूर होते जा रहे हैं. प्रस्तुत लेख में हरियाणा राज्य में दर्शन और लोकधर्म के विषय पर प्रकाश डालना मुख्य उद्देश्य है.

विषयवस्तु

मुख्य विषय को हम निम्नलिखित उपशीर्षकों के अंतर्गत समझ सकते हैं:

- दर्शन का परिचय
- वैदिक-उपनिषद दर्शन
- शैव एवं शाक्य दर्शन
- लौकिक दर्शन (रामायण एवं महाभारत)
- बौद्ध दर्शन
- संत साहित्य
- सूफी साहित्य
- सुधारवादी एवं राष्ट्रिय विचारक
- अकादमिक क्षेत्र में दर्शन की वर्तमान स्थिति
- लोकधर्म एवं साहित्य
- लोकधर्म का ब्राह्मणीकरण
- निष्कर्ष

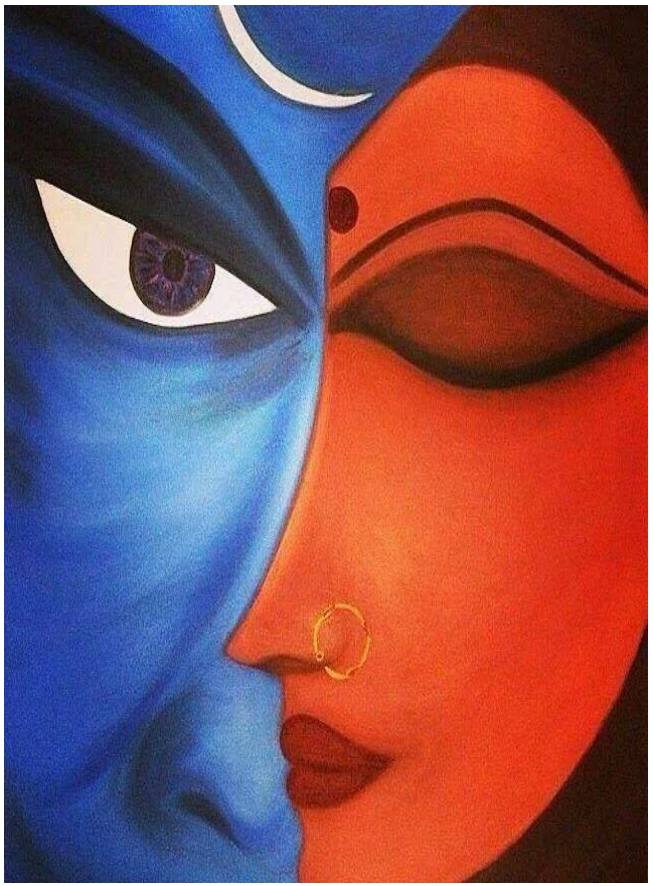

दर्शन का परिचय

- **" दर्शन को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि मानव- जीवन के विविध पक्षों का बौद्धिक अवधारणात्मक चिन्तन या ऐसे चिन्तन का आलोचनात्मक मूल्यांकन दर्शन है** (Pure rational conceptual thought regarding different aspects of human life or a critical thought over such kind of thought may be called as philosophy.)" (देशराज सिरसवाल (2011), पृ.37)
- डॉ. ए.के. सिन्हा के अनुसार, "दार्शनिक चिन्तन मानव प्रकृति का स्वभावगत लक्षण है. किसी भी देश, समाज, अथवा प्रान्त में व्यक्ति की समाज एवं वातावरण के प्रति निरंतर प्रतिक्रिया होती है. इस प्रतिकिया के माध्यम से कल्पनाप्रिय तथा अंतर्दृष्टि सम्पन्न व्यक्ति विश्व और मानव समाज के बारे में दार्शनिक निष्कर्ष निकलते हैं. ये विशेष व्यक्ति अपने दार्शनिक चिन्तन का युक्तिपूर्ण प्रतिपादन करते हैं. उका दार्शनिक चिन्तन युक्तिपूर्ण होने के कारण चिन्तनशील व्यक्तियों के उपर अपना प्रभाव छोड़ता है. ये चिन्तनशील व्यक्ति अपने चिंतन का प्रचार लेख , भाषण, शिक्षण, वार्तालाप इत्यादि द्वारा आम जनता में करते हैं. समय बीतने के बाद यह दार्शनिक चिन्तन, धार्मिक, नैतिक एवं सौंदर्य सम्बन्धी विश्वास में रूपांतरित हो जाता है. यह विश्वास किसी भी समाज में, रीति, परम्परा और मान्यता बन जाता है." (डॉ. साधू राम शारदा (सं.) (1978), पृ.244)

वैदिक-उपनिषद दर्शन

- वैदिक-उपनिषद दर्शन का प्रभाव हरियाणा के जनमानस पर हमें स्पष्ट दिखाई देता है. ऐसा माना जाता है कि वेद- उपनिषद दर्शन का काफी अंश हरियाणा की भूमि पर रचित है. वैदिक ऋषियों ने एक विश्वव्यापक शाश्वत नियम की कल्पना की थी. उन्होंने इस नियम को "ऋत" कहा है . यही प्राकृतिक, सामाजिक एवं नैतिक नियमों का आधार है.
- वेदों में एक ही परमेश्वर पर बल दिया गया है. विशेषरूप से ऋग्वेद में तत्व को एक माना गया है. ऋग्वेद के अनुसार तत्व एक है किन्तु दार्शनिक उसी एक ही तत्व को विभिन्न रूप से व्याख्या करते हैं. अंत में इन्ही परमपुरुष की उपनिषदों में निर्गुण ब्रहम के रूप में कल्पना की है.
- भारतीय दर्शन के अंतर्गत 9 दर्शन आते हैं जिन्हें आस्तिक और नास्तिक की श्रेणी में विभक्त किया है जो निम्नलिखित हैं:
  - आस्तिक दर्शन : न्याय-वैशेषिक, सांख्य-योग, मीमांसा-वेदांत
  - नास्तिक दर्शन : चार्वाक, जैन, बौद्ध

शैव एवं शाक्य दर्शन

- वैदिक धर्म-दर्शन से पूर्व के लोगों 'सैन्धव सभ्यता" का धर्म-विश्वास वैदिक धर्मावलम्बी लोगों से अलग था. कहा गया है कि, "ये लोग मोटे रूप से द्वीदेवतावादी थे, जिसमें पुरुष के रूप में वे एक तीन मुख वाले योगी की पूजा करते थे, जिसे हम शिव का रूप मान सकते हैं." (के. सी. यादव तथा एस. आर. फोगाट (1991), पृ.66) मातृदेवी, पशुओं इत्यादि की भी पूजा करने वाले इन लोगों का धार्मिक जीवन सीधा था.

- शिव परब्रह्म है वे शिव को सर्वोच्च मानते हैं.
- विश्व जननी शक्ति का वर्णन वेदों में भी पाया जाता है. मार्कंडेय पुराण में देवी को जगत जननी कहा गया है. देवी विश्व रचियता है.

- हरियाणा के प्राचीन लोगों की शैव एवं शाक्य दर्शन में काफी आस्था रही है. वे शिव दर्शन के मूल सिद्धांतों को स्वीकार करते हैं. उनका विश्वास अन्य दार्शनिक एवं धार्मिक विचारों के साथ मिश्रित हो गया है और यह मिश्रित धारणायें परम्परा के रूप में समाज में विद्यमान हैं. (डॉ. साधू राम शारदा (सं.) (1978), पृ.250)

बौद्ध एवं जैन दर्शन

- हरियाणा के इतिहास को जब हम गौर से देखते हैं तो हम पाते हैं की बुद्ध की शिक्षा और बौद्ध राजाओं का यहाँ काफी प्रभाव रहा है. स्वयं बुद्ध के यहाँ प्रवचन करने के प्रमाण मिलते हैं. बौध साहित्य से हमें पता चलता है. कैथल, अग्रोहा, रोहतक और कलानौर आदि जगह पर बुद्ध ने प्रवचन किया तथा हिसार और थानेसर बौद्ध धर्म के अच्छे केंद्र बन गये थे. (के. सी. यादव तथा एस. आर. फोगाट (1991), पृ.67)
- ऐतिहासिक तौर पर देखा जाये तो हरियाणा में जैन दर्शन का भी प्रचार हुआ लेकिन बौद्ध दर्शन जितना नहीं. अग्रोहा और रोहतक में जैन धर्म के केंद्र, बौद्ध धर्म के पतन के बाद बने.
- यह बहुत ही मजेदार बात है की वैदिक दर्शन का केंद्र होने के बावजूद ये दो दर्शन अपनी जगह जनमानस में बना पाए और यह तभी सम्भव हो सका जब यह के लोगों ने धार्मिक संकीर्णता को जीवन में स्थान नही दिया.

संत साहित्य

- मध्यकाल में हरियाणा प्रदेश में मुख्यतः हिन्दू, मुस्लिम और सिख तीनों धर्मों का प्रसार और प्रभाव रहा. तीनों धर्मों के लोगों में परस्पर भाईचारा था और एक दूसरे के जीवन को प्रभावित भी किया. कबीर और नानक जैसे संतों को प्रभाव समाज पर स्पष्ट रूप से छाया हुआ था.
- "हरियाणा के संतों ने केवल अध्यात्मवाद को ही को अपने काव्य का प्रतिपाद्य नहीं बनाया अपितु अंधविश्वासों एवं गली-सड़ी परम्पराओं पर भी जमकर प्रहार किया. सामाजिक कुरूतियों के किले तोड़ने में उन्होंने अहम भूमिका निभाई." (डॉ. पूर्णचन्द शर्मा (1990), पृ.5-6)
- "समाज के बह्याडम्बरों से हमें सचेत कर सभी सहज भक्ति, नाम-स्मरण का मूल मन्त्र समझते हैं. गुरू महत्त्व सभी ने स्वीकार किया है. युग की समस्याओं के प्रति ईमानदार रहते हुए भी इन संतों ने मानव-कल्याण, लोक-मंगल की धारणा को पुष्ट करते हुए उस परब्रह्म में लीन होने का महत्वपूर्ण मार्ग प्रशस्त किया है. सभी संत 'कथनी' और 'करनी' में एकरूपता के पक्षधर रहें हैं- लोक चेतना और लोक भाषा के कारण इनकी लोकप्रियता निर्विवाद मानी है."(डॉ. हुकुमचंद राजपाल (2003), पृ.iii-iv)

सूफी साहित्य

❑हरियाणा प्रदेश में संतों की भांति सूफी कवियों की भी परम्परा रही है. महम जिला रोहतक के एक सूफी कवि सैयद गुलाम हुसैन शाह की तुलना 'रसखान से की जाती है लेकिन पानीपत को ही उर्दू का केंद्र माना गया जहाँ से कई साहित्यकारों ने अपना योगदान दिया.

❑हरियाणा प्रदेश दिल्ली के निकट होने के करण तथा पश्चिमी और पूर्वी पंजाब की अपेक्षा अधिक शांत होने के कारण सूफी-संतों के लिए आकर्षण का कारण बना. शताब्दियों तक अनेक सूफी –संतों ने हरियाणा के विभिन्न स्थानों पर रहकर अध्यात्म-साधना की तथा इस प्रदेश के, सामाजिक एवं राजनितिक दृष्टि से उत्पीडित लोनों को न केवल मानसिक शांति ही प्रदान की अपितु उनके सुख-दुःख में भागीदार बनकर उनके हृदय में मुसलमानों के प्रति उदित होने वाली घृणा को भी शमित किया." (डॉ. नरेश (2002), पृ.07)

❑हरियाणा में सूफीमत के विभिन्न सम्प्रदायों का निर्वाह करने वाले चिश्ती संत, कादिरी संत , नकशबंदी संत, कलंदरी संत आदि का साहित्य दर्शन हमें आसानी से मिल जाता है.

सुधारवादी एवं राष्ट्रिय विचारक

❑ईस्ट इंडिया कंपनी के राज की स्थापना के बाद इसाई धर्म का भी प्रचार प्रसार बढ़ गया . 1875 में **स्वामी दयानंद** ने आर्यसमाज की स्थापना की थी हरियाणा में भी आकर 1880 में प्रचार किया, उसके बाद लाला लाजपतराय ने इसकी कमान सम्भाली और हरियाणा ने भी एक नए चिन्तन को समाज में जगह दी.

❑आर्य समाज से प्रभावित होकर हरियाणा के पौराणिक हिन्दुओं ने सनातन धर्म सभा का निर्माण किया जिसके मुख्य नेता झज्जर के पंडित दीनदयालु शर्मा थे.

❑मुसलमानों ने अंजुमने इस्लामियां और सिखों ने सिंहसभा नाम से सुधारवादी आन्दोलन में योगदान दिया और समाज में फैली कुरूतियों जसे तम्बाकू, शराब निषेध, बाल विवाह पर रोक तथा शिक्षा का प्रचार प्रसार किया.

❑ हरियाणा शुरू से ही विविधताओं को अपने में संजोय हुए रहा है इस कारण यह काफी कम समय में आर्थिक प्रगति और सामाजिक विकास की ओर लग गया. यहाँ के जनमानस ने हर विचार को सहर्ष अपनाया और उसकी प्रगति को अपनी प्रगति के साथ आत्मसात किया.

❑सभी सुधारक हमारे लिए दार्शनिक चिन्तन में महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वो किसी न किसी दर्शन और आस्था के के प्रतिबिम्ब बन समाज विकास में लगे हुए थे.

अकादमिक क्षेत्र में दर्शन की वर्तमान स्थिति-I

- हरियाणा क्षेत्र में कुरुक्षेत्र विश्विद्यालय, कुरुक्षेत्र में स्नातकोतर स्तर (रेगुलर और पत्राचार) दर्शन पढ़ाया जाता है और मात्र 10-11 महाविद्यालों में स्नातक स्तर पर दर्शन का अध्ययन और अध्यापन होता है. दर्शनशास्त्र से सम्बन्धित अन्य पाठ्यक्रम जैसे डिप्लोमा इन रीजनिंग, सर्टिफिकेट कोर्स इन भगवद्गीता इत्यादि भी उपलब्ध हैं. डॉ.अजित कुमार सिन्हा ने भारतीय दर्शन जगत में काफी महत्वपूर्ण स्थान अर्जित किया है.
- 1984-85 के आसपास कुरुक्षेत्र विश्विद्यालय का दर्शन विभाग, तत्वमीमांसा और समाज-दर्शन पर शोध में राष्ट्रियस्तर पर पहचान रखता था (के. सत्चिदानन्द मूर्ति (1991), पृ..129) तथा तर्कशास्त्र, विज्ञान और दर्शन के तुलनात्मक अध्ययन सम्बन्धी पठन-पाठन पर महत्व दिया जाता था.. शहीद महीलाल इंस्टिट्यूट , पलवल (हरियाणा) में भी दर्शन में स्नातकोतर उपलब्ध है जोकि ऍम. डी. यू. रोहतक से सम्बद्ध है. अशोक विश्विद्यालय, सोनीपत और जी.डी.गोयनका विश्विद्यालय, गुरुग्राम में भी केवल स्नातक स्तर पर ही दर्शन की शिक्षा उपलब्ध है.
- संस्कृत के पाठ्यक्रम में भी भारतीय दर्शन को पाठ्यक्रम में रखा गया है. साथ ही योगदर्शन में कुछ पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं जिन्हें शारीरिक शिक्षा विभागों द्वारा संचालित किया जाता है. शिक्षाशास्त्र के विभिन्न पाठ्यक्रमों में भी दर्शन के सिद्धांतों का वर्णन किया जाता है.
- कुछ दार्शनिकों और दर्शन सम्प्रदायों के अध्ययन केंद्र भी हरियाणा के विश्विद्यालयों और महाविद्यालों में स्थापित हुए हैं जैसे गाँधी स्टडी सेंटर, श्री अरविन्द स्टडी सेंटर, स्वामी विवेकानंद स्टडी सेंटर, डॉ अम्बेडकर स्टडी सेंटर, बुद्धिस्ट स्टडी सेंटर, महाऋषि वाल्मीकि चेयर, स्वामी दयानंद चेयर, सेंटर ऑफ़ एथिक्स, स्पिरिचुअलीटी एंड सस्टेनबिलिटी, महात्मा गाँधी सेंटर फॉर पिस स्टडीज, गुरु जम्बेश्वर जी महाराज इंस्टिट्यूट ऑफ़ रिलीजियस स्टडीज, श्री गुलजारीलाल नंदा सेंटर ऑफ़ एथिक्स, फिलोसोफी, म्यूजियम एंड लाइब्रेरी एंड सेंटर फॉर पॉजिटिव फिलोसोफी एंड इंटरडीस्प्लिनरी स्टडीज इत्यादि. पर इनकी गणना राष्ट्रिय स्तर पर नगण्य है.

अकादमिक क्षेत्र में दर्शन की वर्तमान स्थिति-I

- वर्तमान समय में देखा जाये तो हरियाणा में दर्शन के पठन और मनन की एक विस्तृत परम्परा होते हुए भी यह कुछ ही अकादमिक क्षेत्र तक सिमित होकर रह गया है. जिसका मुख्य कारण यहाँ के लोगों में दर्शन और धर्म में अंतर न कर पाना रहा है.
- भारत में दर्शन के विकृत रूप को देखकर डॉ. दयाकृष्ण ने अपनी पुस्तक "ज्ञानमीमांसा" में लिखा था, "दर्शन के नाम पर भारत में एक ऐसी अबौद्धिकता का प्रचार किया जाता है जिसे अध्यात्म का नाम देकर बुद्धि के अनन्त आक्षेपों से बचाया जाता है. बात शब्द की नहीं है यदि दर्शन का अर्थ वही है , जो ये लोग देते हैं तो हमें उसके लिए कोई नया नाम खोजना पड़ेगा , जिसका बुद्धि ही क्षेत्र है और तर्क जिसका प्राण है. शायद 'फिल्स्फा' उसके लिए अधिक उपयुक्त शब्द हो. जहाँ बुद्धि की बात नहीं है वहां दर्शन की बात करना फिजूल है. ध्यान लगाईये, खडताल बजाईये, प्राणायाम कीजिए, योग साधिए, यह सब ख़ुशी से कीजिए पर कम से कम इनको दर्शन की संज्ञा मत दीजिए. अलग-अलग चीजों को एक नाम से पुकारने से कोई लाभ नहीं है."
- दर्शन का अध्ययन और अध्यापन तभी हो सकता है जब बौधिकता का जीवन का जीवन में समावेश करते हुए समाज और उसकी आवश्यकताओं के प्रति जागरूक हुआ जाये तथा एक अच्छे अच्छे समाज और देश बनाने का संकल्प मनुष्य में चलता रहे.

लोकधर्म एवं साहित्य

- लोकधर्म से अभिप्राय है, "वास्तविक धर्म से भिन्न वे बातें या कृत्य जो जन-साधारण में प्राय धर्म के रूप में प्रचलित हों।जैसे—तंत्र-मंत्र भूत-प्रेत की पूजा- वीर पूजा आदि।" सबसे अचरज की बात है की यह हमें सिर्फ परम्परा में देखने को मिलते हैं इनका कोई लिखित इतिहास नहीं है हिंदी में लोक धर्म शब्द के अर्थ निम्नलिखित है:

- पीढ़ी से पीढ़ी तक फैली मान्यताओं, अंधविश्वासों और सांस्कृतिक प्रथाओं के एक समूह का वर्णन करता है.
- एक धर्म जो जातीय या क्षेत्रीय धार्मिक परंपराओं से बना है.
- लोगों द्वारा बनाया एक धर्म. **(The WiseDictionary)**

- हरियाणा क्षेत्र एवं उसके आसपास के राज्यों में निम्नलिखित लोकदेवताओं का हमें वर्णन मिलता है:

- दादा नगर-खेडा (हर गाँव और शहर में)
- गोगा-पीर (बागड़)
- पाथरी वाली माता (पाथरी हरियाणा)
- पाँच बावरी (सबल सिंह, केसरमल,नथ मल, हरी सिंह. जीत सिंह बावरी)
- माता श्याम कौर इत्यादि.

अगर हम ऐतिहासिक और सामाजिक स्तर पर देखें तो ये लोकदेवता अपने समय के आदर्श पुरुष रहे होंगें और अपने क्रांतिकारी विचारों या कर्म की वजह से जनमानस के जीवन का हिस्सा बन गये. मेरा ऐसा मानना है कि वर्तमान समय में लोकधर्म और लोक-विश्वासों के ब्राह्मणीकरण और संस्कृतिकरण, हमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तौर पर मूलनिवासी, आर्य-अनार्य संघर्ष की छवि प्रदान करता है और वर्तमान में "नया इतिहास" लिखने और समझने की ओर ले जाता है. आस्तित्व के लिए संघर्ष विरोध के स्वर के रूप में मुखरित होकर हमारे सामने आ रहा है.

लोकधर्म का ब्राह्मणीकरण-I

सांस्कृतिक गतिशीलता की इस प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए श्रीनिवास ने प्रारम्भ में 'ब्राह्मणीकरण' (Brahminization) शब्द का प्रयोग किया. परन्तु बाद में उसकी जगह "संस्कृतिकरण शब्द का इस्तेमाल किया. (डॉ. जे. पी. सिंह (2016) आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन,) लेकिन यह शब्द आज भी हमारे सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्र में प्रासंगिक होने के साथ साथ व्यवहार में भी है. सुरेंद्रपाल सिंह का लेख "लोक देवता गुग्गा पीर का बदलता स्वरूप" के निम्नलिखित अंश दृश्व्य हैं:

- "राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के कुछ इलाकों में गुग्गा पीर एक लोकप्रिय लोकदेवता है....उल्लेखनीय है कि अधिकतम गुग्गा मैडी की इमारतों के चारों कोनों पर एक एक मीनार बनी होती है जो मैडी को एक इस्लामिक स्टाइल का रूप देती हैं। मैडी के अंदर या तो मजार बनी होती है या घोड़े पर सवार हाथ में भाला उठाए हुए जाहर वीर गुग्गा की मूर्ति होती है।....
- गुग्गा में आस्था रखने वाले हिन्दू भी हैं और मुसलमान भी। सभी जातियों के लोग गुग्गा पीर में आस्था रखते हुए दिखाई दे जाएंगे।.....अब उच्च जातियों के लिए लौकिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए गुग्गा भी उनके अन्य देवी देवताओं के बीच एक स्थान ग्रहण कर चुका है जबकि अनेकों निम्नवर्ग के समुदायों के लिए गुग्गा आज भी उनका मुख्य इष्टदेवता है।
- अब मुख्य गुग्गा मैडी में मेले के समय एक महीने के लिए ब्राह्मण पुजारी भी नियुक्त कर दिया गया जो चोहिल राजपूत मुसलमान द्वारा ख़ानदानी रूप से 12 महीनों के लिए उपस्थित होने के अलावा है। पूजा विधान का यथासंभव ब्राह्मणीकरण किए जाने का प्रयास किया जा रहा है। अब गुग्गा मैडियों में शिव, हनुमान, गणेश, कृष्ण आदि अन्य हिंदू देवताओं की मूर्तियाँ भी स्थापित की जाती है। पारम्परिक रूप से निम्न वर्ग के भगतों का स्थान ब्राह्मण पुजारियों द्वारा लिया जा रहा है। आरती, हवन, गणेश वंदना, संस्कृत श्लोकों के माध्यम से उच्च वर्ण के यजमान अपना स्थान बना रहे हैं। ऐसे दृष्टांत भी देखने में आते हैं कि यजमान अपने ब्राह्मण पुरोहित को मेले में अपने साथ ले जाते हैं जो मेला प्रांगण में ही ब्राह्मण हवन कर लेते हैं।

लोकधर्म का ब्राह्मणीकरण-I I

- पुराने साधारण थान की जगह अब गुग्गा पीर की मूर्तियाँ घोड़े पर सवार, हाथ में भाला उठाए हुए बहादुर राजपूत के रूप में आम हो गई है। थान एक छोटा चबूतरा या घर में आले की जगह होती है जिस पर सांप की आकृति छाप दी जाती है या मिट्टी से बने घोड़े रखके पूजा की जाती है।
- गुग्गा के कलेंडर और चित्र भी राजपूत योद्धा के रूप में छापे जाते हैं । इसके अलावा गोगा पुराण, गोगा चालीसा, गोगा आरती आदि पुस्तिकाएँ थोक में बेची या बाँटी जाती हैं। इन सबमें गुग्गा को गुग्गा पीर की बजाय गुग्गा वीर लिखा जाता है। एक जन नायक का जन्म और उसकी बहिष्कृत और अछूत समाज के लोक देवता के रूप में पीर से वीर की हैसियत में एक छोटे हिंदू देवता की तस्वीर हमारे सामने है।"

- **कुछ अन्य उदाहरण**
- चंद्रभूषण सिंह यादव, कृष्ण और यादवों का ब्राह्मणीकरण-Posted on August 7, 2014
- https://www.bhadas4media.com/bhramanization-of-krishna-yadavs/
- बाल्मीकि प्रसंग : जरूरत परंपरा-प्रक्षालन की है- ओमप्रकाश कश्यप, आखरमाला, सितम्बर 28, 2015.
- https://omprakashkashyap.wordpress.com/2015/09/28/बाल्मीकि-प्रसंग-जरूरत-पर/
- इतिहास को जानबूझ कर नजरअंदाज किया जा रहा है : सबरीमाला और आदिवासी देवता का ब्राह्मणीकरण-AATHIRA KONIKKARA, The Caravan, ०३ नवम्बर २०१८
- Link:https://caravanmagazine.in/religion/pk-sajeev-sabarimala-mala-araya-brahminisation-adivasi-deity-hindi

निष्कर्ष

- निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हरियाणा प्रदेश में दर्शन और इसके विकास का एक लम्बा तथा आकर्षक इतिहास रहा है. हमारी आज की पहली आवश्यकता बौद्धिकता के साथ जीवन यापन करना है जिसमें दर्शन का बहुत बड़ा योगदान हो सकता है.
- समाज के प्रति संवेदना मूल्यों से आती है और दर्शन इसमें सक्षम है. आज विश्व पटल पर दर्शन-अध्ययन विविध शाखाओं के साथ यह लगातार विकसित होता जा रहा है जिसमें कला, व्यवसाय, समाज विज्ञान, विज्ञान आदि क्षेत्रों से सम्बन्धित है जिसे हरियाणवी समाज को भी पहचानने की जरूरत है. साथ में यह भी कि लोकधर्म का निर्वाह हम तभी कर पाएंगे, जब हम सबको "साधन" न मानकर "उद्देश" समझ जीवन मूल्यों का निर्माण करें.

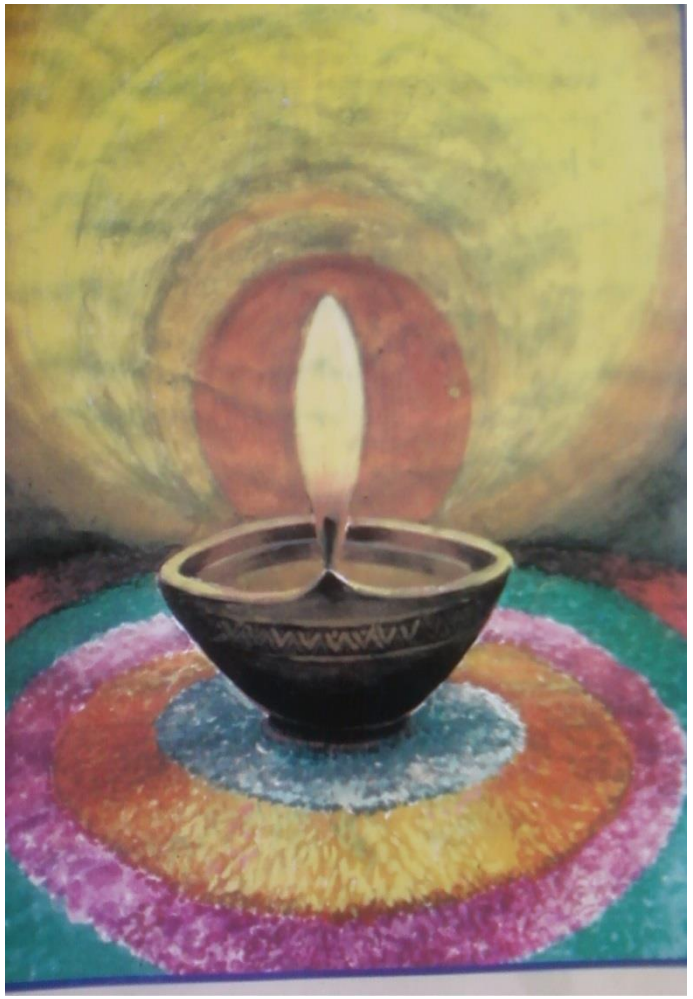

सन्दर्भ-ग्रन्थ :

- डॉ. नरेश (2002), *सूफी परम्परा और हरियाणा की भूमिका*, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला.
- के. सी. यादव तथा एस. आर. फोगाट (1991), *हरियाणा : ऐतिहासिक सिंहावलोकन*, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़.
- डॉ. साधू राम शारदा (सं.) (1978), *हरियाणा:एक सांस्कृतिक अध्ययन*, भाषा विभाग हरियाणा, चंडीगढ़.
- डॉ. पूर्णचन्द शर्मा (1990), *हरियाणवी साहित्य और संस्कृति*, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़.
- डॉ. हुकुमचंद राजपाल (2003), *उत्तरी भारत के संत*, उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, पटियाला.
- के. सच्चिदानन्द मूर्ति (1991), *फिलोसोफी इन इंडिया*, मोतीलाल बनारसीदास एवं इंडियन कौंसिल ऑफ़ फिलोसोफिकल रिसर्च, नई दिल्ली.
- दया कृष्ण (1973), *ज्ञान मीमांसा*, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर.
- देशराज सिरसवाल (2011), "समकालीन भारतीय समाज में दर्शन-शास्त्र की उपादेयता", चिंतन: रिसर्च जर्नल, वर्ष 01, नं. 01, मार्च , पृ. 37-40 (ISSN:2229-7227).
- "लोक-धर्म", शब्द का अर्थ, *भारतीय साहित्य ग्रन्थ, 10-12-2018*: https://www.pustak.org/index.php/dictionary/word_meaning/लोक-धर्म
- The WiseDictionary, 11-12-2018, https://www.thewisedictionary.com/hindi/लोक-धर्म
- डॉ. जे. पी. सिंह (2016), *आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन* https://books.google.co.in/books?isbn=8120352327
- सुरेंद्रपाल सिंह, (2018), "लोक देवता गुग्गा पीर का बदलता स्वरूप", देसहरियाणा, December 10, 2018
- https://desharyana.in/2018/12/10/सुरेंद्रपाल-सिंह-लोक-देव/?fbclid=IwAR2idha2F0gvUAAcbA3PQJ9us3h7lIfQz511tjAYcVfme4b_6mfM5H49tpo

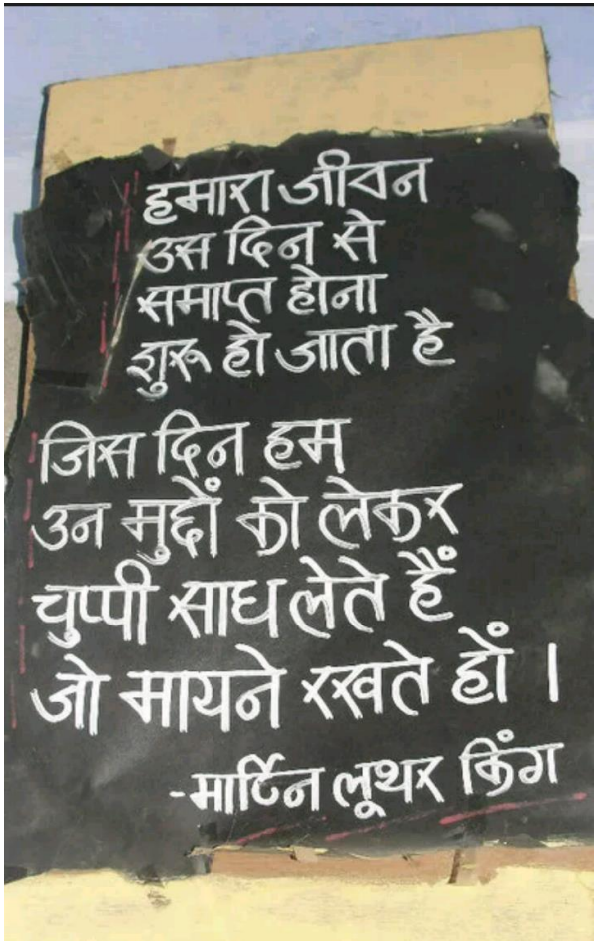

Thanks

Dr. Desh Raj Sirswal

(Assistant Professor, Philosophy)

Smt. Aruna Asaf Ali Govt. P.G. College,

Kalka (Panchkula)-133302

dr.sirswal@gmail.com

Note:

This PPT is presented on 13th December, 2018 at UGC-HRDC, Kurukshetra University, Kurukshetra in 82nd Orientation Progrmame as a participant.